P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

लोक संगीत की अनुपम विधा – चैती

श्वेता खरे
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उ.प्र., भारत

सारांश

लोक संगीत किसी भी देश की संस्कृति का आईना होता है । भारत देश की प्रमुख विशेषता इसकी विविधता है अर्थात विविध राज्य, उनका रहन सहन, खानपान, भाषा आदि। यही विविधता यहां के लोग संगीत में भी परिलक्षित होती है। चैती लोक में प्रचलित वह गीत है जो विशेषकर चैत मास में गाया जाता है । इसका प्रचलन मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में अधिक रहा है। किंतु कुमायूं, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि राज्यों में भी इसका गायन होता रहा है बस नाम में भिन्नता पाई जाती है। चैती के गीत एक विशेष मास में भले ही गाए जाते हैं परंतु इसके विषय में बहुत विविधता पाई जाती है। इस गीत की प्रमुख विशेषता इसका टेक पद है जिसकी तिहाई इस लोकगीत के सौंदर्य को और भी बढ़ा देती है।

मुख्य शब्द : चैती, झलकुटिया चैती, घाँटो चैती।

प्रस्तावना

हिन्दू कैलेंडर का प्रथम माह ''चैत्र'' और अंतिम माह है ''फाल्गुन''। दोनों ही माह बसंत ऋतु में आते हैं। ईसाई माह के अनुसार यह मार्च में आता है। चैत्र की प्रतिपदा तिथि से ही हिन्दू नववर्ष की शुरूआत भी होती है। ईरान में इस तिथि को ''नौरोज'' यानी ''नया वर्ष''मनाया जाता है। आंध्र में यह पर्व ''उगादिनाम'' से मनाया जाता है। उगादि का अर्थ होता है युग का प्रारम्भ, अथवा ब्रह्मा की सृष्टि की रचना का पहला दिन। इस प्रतिपदा तिथि को ही जम्मू–कश्मीर में 'नवरेह', पंजाब में 'वैशाखी', महाराष्ट्र में 'गुड़ीपड़वा', सिंध में 'चेतीचंड', केरल में 'विशु', असम में 'रोंगली विट' आदि के रूप में मनाया जाता है।

चूंकि चैत्र माह 'चित्रा नक्षत्र' में पड़ता है इसलिए यह माह 'चैत' कहलाता है और 'चैत्र' माह में गाये जाने के कारण ये गीत 'चैती' कहलाते है।

चैती गीतों की व्याकरण सहित जो व्याख्या प्राप्त होती है उसके अनुसार ''चैत्र'' शब्द 'चित्रा' में 'अण' प्रत्यय को लगाने में बना है। यह एक चन्द्रमास का नाम है जिसमें चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में स्थित रहता है। इससे बनने वाले अन्य पद है–चैत्रीः, चैत्रिकः और चैत्रिनः।''[1] इस प्रकार चैती शब्द की तो व्याख्या प्राप्त होती है किन्तु इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुये कोई महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त नहीं होते हैं। पर विद्वानों का ऐसा मानना अवश्य है कि इसी ''चैत्री'' शब्द के अपभ्रंश के रूप में आगे चलकर ''चैती'' शब्द प्रचलन में आ गया होगा।

चैती गीतों के उद्गम की बात करें तो इसके सम्बन्ध में ऐसा कोई निश्चित इतिहास या इसकी उत्पत्ति को लेकर विभिन्न विद्वानों के मतों की प्राप्ति अवश्य नहीं होती है लेकिन यह निश्चित है कि फाल्गुन पूर्णमासी के दिन होली की समाप्ति होते ही चैती गीतों का गायन आरम्भ हो जाता है। इसके साथ ही चैती की गाथा कृषि प्रधान देश में निश्चित रूप से खेत–खलिहानों से भी संबंध रखती है। तभी तो फसल तैयार हो जाने के बाद जब अनाज घर में आ जाता है तो इसी खुशी में किसान निश्चिंत होकर जो गीत गाता है और यहीं से होता है–चैती का उद्भव।

अब यदि चैती गीतों की बात करें तो हम पाते हैं कि चैती गीत लोक गीतकारों की सहज, स्वभाविक माधुर्य से ओत–प्रोत रचना है जो एक कंठ से दूसरे कंठ में जाकर लोक में प्रचलित हो गई। पर यदि विशुद्ध चैती गीतों की बात करें तो इनका प्रचलन बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग विशेष कर अवध, बलिया, गाजीपुर, मिर्जापुर, बनारस, गोरखपुर, इलाहाबाद आदि स्थानों पर अधिक दिखता है। इसके अतिरिक्त भारत के भिन्न–भिन्न प्रांतों व जिलों में चैती गीतों को अलग–अलग नामों से भी गाने की परम्परा है जैसे–''कुमाऊँ'' में वहाँ की चैत्रमास में चैती गाई जाती है पर इसको ''चेतू'' की संज्ञा प्रदान की गई है। चैत्रवदी में राजस्थान में ''धुड़ला गीत'' या ''धुडल्यों'', ''धूमेलागीत'' राजस्थानी बोली में गाई जाती है। गुजरात प्रांत में चैती गीत उपलब्ध नहीं होते हैं पर

''गरबा–गीत'' में चैत्र–फागुन एवं बसंत का चित्रण होता है। महाराष्ट्र में स्त्रियाँ ''चैतागणां'' गीत गाती हैं, जिनकी भाषा मराठी होती है।''[2] मैथिली बोली (दरभंगा, मधुबनी आदि) में चैत्र माह में जो गीत गाये जाते हैं उन्हें चैती ना कह कर ''चैतार'' कहा जाता है। चैतार गीतों की विशेषता यह है कि इसकी प्रत्येक पंक्ति ''अहो रामा से प्रारम्भ होती है उसका अवसान हो राम से होता है।''[3]

इस प्रकार चैती गीतों के सम्बन्ध में उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि जिन–जिन क्षेत्रों में इन गीतों का प्रचलन है उनके द्वारा ही चैती गीतों का विकास भी अवश्य प्रदर्शित होता है।

चैती गीत और वर्ण्य विषय

ऋतुकालीन गीतों के अन्तर्गत चैती गीत प्रमुख स्थान रखते हैं। चैती गीतों के विषय के बारे में बात करें तो हम पाते हैं कि इन गीतों में जीवन के प्रत्येक रूप की विशद् व्यंजना हुई है जो अधोलिखित हैं–

चैती गीतों में चैत्र मास, प्रकृति का वर्णन

चूंकि चैती गीत चैत्र मास में गाये जाते हैं और इन गीतों में चैत्र मास का वर्णन ना हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता है। चैत महीने की विशेषताओं का उल्लेख करता हुआ चैती गीत का वर्णन इस प्रकार से है–

''चइत माह परम सोहाओन हो रामा
चइत माहे।
महुआ फलाएल, आम महुआएल
धरती जे लगइ लोभाओन हो रामा
चइत माहे।
लाल लाल टेस पलास वन झलकर
लाल लाल पतिओं में टिकोलो जे समकई
चुनरी लगर मनभाओन हो रामा
चइत माहे।''[4]

इस प्रकार से चैती गीतों में प्रकृति की मनोहारी छँटा का दृश्य देखने को मिलता है।

चैती गीतों में श्री कृष्ण का वर्णन

भगवान श्री कृष्ण और उनकी लीलाओं को भी आधार बनाकर कई चैती गीतों की रचना की गई है। जैसे कि एक चैती गीत का वर्णन किया जा रहा है। जिसमें श्रीकृष्ण जी के स्वरूप का बड़ा सुन्दर व सहज वर्णन किया गया है–

''कान्हा चरावे धेनु गइया हो रामा।
जमुना किनरवा।
जमुना किनरवा कदमिया के गछिया
ताहि चढ़ि बसिया बजावे हो रामा
जमुना किनरवा।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे
गले सोभे मोतिया के मलवा हो रामा
जमुना किनरवा।''[5]

चैती गीतों में भगवान शिव का वर्णन

श्री कृष्ण की तरह चैती गीतों में भगवान शिव के सम्पूर्ण स्वरूप का वर्णन करते हुये एक चैते गीत उपलब्ध होता है–

''डमरू बाला रे जोगिया मन भावे हो रामा डमरू वाला
अंग भभूत गले रूण्डमाला, शेषनाग लपटाए हो रामा।
डमरू वाला रे.....
जहाँ–जहाँ जाए जोगी धूनिया रमावे,
और बिछावे मृगछलवा हो रामा।
डमरू वाला रे.....''[6]

चैत के गीतों में धार्मिक भावना

चैत का महीना बहुत से धार्मिक पर्वों एवं धार्मिक भावनाओं से जुड़ा है। चैत्र शुक्ल नवमी को ही भगवान् श्री राम का जन्म अयोध्या के राजा दशरथ के घर हुआ था। जिसे हिंदू धर्म में बड़े धूमधाम से उत्सव के रूप में मनाया जाता है जो समस्त उत्तर भारत में 'रामनवमी' के नाम से प्रसिद्ध व प्रचलित है। इसके पूर्व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक मंदिरों में रामायण का पाठ होता है। चैत्र मास में ही नवरात्रे भी आते हैं जिसमें माँ भगवती दुर्गा जी की स्तुति की जाती है। रामनवमी के दिन चैता गाने की परम्परा रही है, जिसमें श्रीराम के जन्म तथा उनके जीवन की अन्य घटनाओं का वर्णन होता है। मुख्य रूप से चैता गीत श्री राम के जन्म पर ही गाया जाता है। ऐसा ही एक चैता गीत का उल्लेख प्राप्त होता है जिसमें राम जन्म के अवसर पर घर–घर बंधाइया दी जा रही है। राजा दशरथ सोना लुटा रहे हैं तो वही रानी कैकेयी सोने की अंगूठी दान में दे रही है–

''रामा चढ़त चइतवा राम जनमले हो रामा
घरे घरे बाजेला अवध बधइया हो रामा,
रामा दसरथ लुटावे अनधन सोनवा हो रामा
कैकेयी लुटावे सोने के मुनरिया हो रामा।''[7]

ऐसे ही कई और चैता गीत मिलते हैं जिसमें राम जन्म के अवसर पर बधैया देने का वर्णन प्राप्त होता है। उदाहरण स्वरूप–

''जनम लियो रघुरैया हो राम।
चइत महिनवाँ।''[8]

चैती गीत और अन्य विषय

ननद–भाभी के संबंधों, श्रृंगार रस के संयोग–वियोग के पक्ष को तो लेकर कई प्रसिद्ध चैतियों की रचना की गई है। किन्तु सामान्य विषयों से हटकर भी कुछ अन्य विषय है जिन्हें आधार बनाकर चैती गीतों की रचना की गई है। इसी क्रम एक ऐसी चैती गीत का उल्लेख मिलता है जिसमें राष्ट्रीय भावना का स्पष्ट चित्रण देखने को मिलता है। गाँधी जी का स्वप्न था कि सभी को समान अधिकार, सुविधाऐं मिले। इस स्वप्न के पूर्ण होने का उद्गार एक ग्रामीण महिला गीत के द्वारा कुछ इस प्रकार कर रही है–

''गाँधी तोरा सुराज सपनवाँ हरि मोरा पूरा करिहैं ना।
सोने की घाटी म ज्योना परोस्यों, सबका जेवाई के जेंइहें ना।
गाँधी.....''[9]

इसके अतिरिक्त अन्य विषयों को ओर दृष्टिपात करें तो इन गीतों में दैनिक जीवन के शाश्वत क्रियाकलापों का चित्रण भी प्राप्त होता है। साथ ही सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल–विवाह, बेमेल विवाह आदि पर भी प्रहार करते हुये चैती गीतों की रचना की गई है। इस प्रकार चैती गीतों में लोकमानस का समग्र रूप चित्रित हुआ है।

चैती के प्रकार

सामान्यतया चैती गीत के तीन प्रकार प्राप्त होते हैं।

1. साधारण चैती
2. झलकुटिया चैती
3. घाँटो चैती

साधारण चैती

यह चैती का प्रथम प्रकार है जिसे व्यक्ति विशेष द्वारा या एक ही गायक द्वारा ढोल आदि वाद्यों के साथ गाया जाता है। इसे सिर्फ चैती या चइती के नाम से भी जाना जाता है। साधारण चैती का एक उदाहरण इस प्रकार है–

(मांझ खमाज आधारित)

''नइहरे से केहू नाही अहलें हो रामा। बितले फगुनवाँ
बाबा मारो रहितें त नउवा के पढ़वतें
भउजी के कठिन करेजवा हो रामा। बितले फगुनवाँ''[10]

साधारण चैती के तीन उप–भेद का उल्लेख मिलता है–

खड़ी चैती

इस चैती की विशेषता है कि यह ''एक स्वर में भी गाई जा सकती है।''[11]

इसमें प्रयुक्त होने वाले स्वरों की प्रकृति अधिक परिष्कृत और ललित होती है। मुख्य रूप से इसमें कहरवा ताल का प्रयोग किया जाता है। खड़ी चैती के उदाहरण निम्न हैं–

''सेया मोरा रे कुसुमी बोअइह हो रामा
चम्पा लगइह, चमेली लगइह
खेतवनि कुसुम फलइह हो रामा।''[12]

निर्गुण चैती

इस प्रकार के चैती गीतों का भाव भक्ति रस से ओत–प्रोत होता है। इस संदर्भ में उदाहरण स्वरूप एक गीत इस प्रकार है–

(निर्गुण चैती)

''पिया से मिलन हम जाएब हो रामा। पिया से मिलन।
अतलस लँहगा कुसुम रंग सारी,
पहिर पहिर गुन गाएब हो रामा। पिया से मिलन।
बाजू बन्द अनन्त पहिरके,
नाम के नथ झमकाएब हो रामा।
ज्ञान ध्यान के घुँघरु बाँधे
सबदन माँ भराएब हो रामा।
कहत कबीर सुनो भई साधो,
बहुरि न यहि जग आएब हो रामा। पिया से मिलन।''[13]

झूमर चैती

साधारण चैती के इस प्रकार में द्रुत कहरवा का प्रयाग किया जाता है। गीतों का वर्ण्य–विषय झूमर गीतों की तरह श्रृंगारिक होता है। शायद इसी कारण से इस चैती को 'झूमर चैती' कहा गया होगा। उदाहरण स्वरुप

''पाकल–पाकल पनवा के खिलिया लगवली हो रामा,
ओही पनवा पिया के खिलवती हो रामा।''[14]

झलकुटिया चैती

'झलकुटिया' शब्द ''झाल+कूट+इया (प्रत्यय)'' को मिलाकर बना शब्द है। झाल कूटने (झाल कूटने का अर्थ जोर–जोर से बजाना है) की कल्पना से ही इस गीत का नाम 'झलकुटिया' पड़ा होगा। जिसमें चैती को सामूहिक रुप से झाल कूटकर या बजाकर गाई जाती होगी। इस गीत को गाने की एक परम्परा प्रचलित है जिससे गीत को गाते समय गानेवाले दो दल में विभक्त हो जाते है। पहला दल एक पंक्ति कहता है तो दूसरा दल उसके टेक पद को जोरों से गाता है। इसे उदाहरण द्वारा और स्पष्ट रुप से समझ सकते है–

पहला दल – रामा चइत की निंदिया बड़ी बइरिनियाँ
दूसरा दल – हो रामा सुतलो बलमुआ (टेक पद)
पहला दल – नाहीं जागे हो रामा
दूसरा दल – सुतलों बलमुआ (टेक पद)[15]

इस गीत की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पहला दल गीत की पहली पंक्ति को जिस स्वर में गाता है, दूसरा दल उससे उच्चे स्वर में टैकपद को गाता है जो इसके सौंदर्य को और भी बढ़ाता है।

घाटो चैती

'घाटो' शब्द संभवतः 'घोटना' शब्द से बना है और घोटना का अर्थ खूब मथना होता है। जैसे कि भांग को घोटने वाल व्यक्ति भी उसी प्रक्रिया के साथ झूमने लगता है ठीक इसी तरह घाटो चैती मे भी गायक गीत को बड़ी मस्ती में झूम–झूम कर गाते है जो घोटने या मथने का ही आभास कराता है शायद इसीलिए इसका नाम घाटो चैती पड़ा हो। इसे पुरुष वर्ग द्वारा ही गाया जाता है।

यह गीत भी झलकुटिया चैती की तरह ही गाया जाता है। इस गीत को गाने वाले वर्ग को दो दल मे विभाजित किया जाता है।

चैती गीतों के रचनाकार

चैती गीतों के रचनाकारों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है किन्तु कुछ एक रचनाकारों का नाम चैती गीतों के संबंध में प्रमुखत से लिया जाता है जिनमें ''बुलाकीदास'' का नाम और उनका ''चैती घांटों–पद'' बहुचर्चित है। इन्हें ''बुल्ला साहब'' के नाम से भी जाना जाता है। चैता गीतों को ''घांटों'' की संज्ञा भी इन्होंने ही प्रदान की है। जैसे–

''दास बुलाकी चहत 'घांटों' गावे हो रामा
गाई गाई बिरहिनि समझावै हो रामा।।''[16]

इनके अतिरिक्त ''दरिया साहब, उर्दू–कवि सैयद अली मुहम्मद शाद, रामदास (बुलाकीदास के शिष्य), सन्त कवि केसोदास (चैती शैली में निर्गुण भक्तिपरक गीतों की रचना की), सारन जिले के कवि सुरुजमल, बनारस के कवि देवीदास, कवि श्री केवल, दुखमोचन गोपीनाथ, सुरुज लाल, कबीरदास, डॉ0 परमानंद पाण्डे, डॉ0 अजितनारायण सिंह तोमर''[17] इत्यादि कई रचनाकारों ने चैती गीतों की रचना व विकास में योगदान प्रदान किया है।

चैती गीतो के कलाकार

चैती गायन शैली दक्षिण बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में अधिक प्रचलित है। चैती गीतों के कलाकारों मे भी इन्हीं स्थानों के कलाकारों के नाम अधिक प्राप्त होते है। इसी क्रम में वाराणसी निवासी श्री राम प्रसाद मिश्रा उर्फ 'रामू जी' (रामदास के शिष्य) का नाम उल्लेखनीय हैं।

इसके अतिरिक्त पटना निवासी स्व0 बाबू श्यामनारायण सिंह, दरभंगा घराने के पं0 रामचतुर मिलक (जिन्होने ध्रुपद धमार शैली में चैतिया गयी) आदि का नाम प्रमुख स्थान रखता है बनारस घराने के भी कई कलाकार हुये है जिन्होने चैती गायन के क्षेत्र उपलब्धि प्राप्त की है जैसे–पं0 महादेव मिश्र, पं0 हरिशंकर मिश्रा, जानकीबाई इलाहाबादी, राधा बाई, सिद्धेश्वरी देवी आदि।[18] वर्तमान समय के कलाकारों में गिरिजा देवी जी, पं0 छन्नू लाल मिश्र जी राजन–साजन मिश्र जी, शारदा वेलेंकर आदि का नाम प्रमुख है।

चैती गायन शैली की विशेषताएं

संगीत की दृष्टि से चैती अत्यन्त मधु एवं कर्णप्रिय गायन शैली है जो अपने अंदर कई विशेषताओं को संजोये हुये है।

चैती गायन की अपनी एक विशिष्ट शैली है, एक विशेष ढ़ग है। चैती गीतों की सबसे प्रमुख विशेषता है टेक के रुप में या गीत के साथ ''अहो रामा'' या ''रामा'' पद का प्रयोग होना। ''अहों रामा'' या ''रामा'' पद का प्रयोग पंक्ति के आरम्भ में हो या ना हो ये आवश्यक नहीं है किन्तु पंक्ति के अन्त में इन पदों के प्रयोग को आवश्यक बताया गया है। पंक्ति के अन्त में ''हो रामा'' पद का प्रयोग चैती गीत के तीनों प्रकारों में अवश्य किया जाता है। उदाहरण स्वरुप–

''चैत मास चुंदरी रंगाय द हो रामा''

चैती गायन की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें दूसरी पंक्ति के प्रथम दो पदों की आवृत्ति उस पंक्ति के गायन समाप्त हो जीने के बाद पुनः की जाती है टेक पद के रुप में। उदाहरण स्वरुप–

''मोर चुनरिया सैंया तोर पगड़िया
एकहि रंगे रंगाएब हो रामा, एकहिं रंगे।''[19]

चैती गायन में स्वरों के प्रयोग का तरीका भी इसकी प्रमुख विशेषता को बताता है सामान्यतः चैती गायन का आरम्भ मन्द स्वर से होता है। फिर बीच में ''उच्च स्वर'' और अन्त में पुनः ''मन्द स्वरों का प्रयोग किया जाता है।

चैती गायन की प्रमुख विशेषता इन गीतों के लय में किया जाने वाला परिवर्तन है। अर्थात चैती गायक स्थायी के पंक्ति को सात मात्रा में गाना प्रारम्भ करते है। किन्तु अन्तरे का उठान आठ मात्रा की ताल से करते है। आठ मात्राओं में गाने के उपरान्त गायक तरह–तरह से अपने कला–कौशल का परिचय देता है और पुनः स्थायी की पंक्ति सात मात्रा में पकड़ लेता है।

चैती किसी थाट विशेष की उपज नहीं है। विशुद्ध चैती, मात्र लोकधुन है, किन्तु स्वर–संयोजन को देखते हुये चैती के कलाकार इस गायन शैली को अधिकतर खमाज थाट के अन्तर्गत रखते है। जब से चैती गीतों को शास्त्रीय गायकों का सान्निध्य मिला है तबसे इन गीतों को पीलू, देस, तिलकामोद, गाटा, जै–जैवन्ती''[20] आदि रागों में भी बाँधकर गाया जाने लगा है।

चैती गायन के साथ संगत वाधें के रुप में ढोलक, झांझ, मँजीरा तबला, हरमोनियम आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य चैती गीत के विकास, तथा इसके प्रमुख अवयवो पर प्रकाश डालना है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत लेख के लेखन के लिए उपलब्ध साहित्य का अवलोकन किया गया है। इसमें प्रमुख रूप से पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की सहायता ली गई है।

संकल्पना तथा परिकल्पना

प्रस्तुत लेख के मूल में यही संकल्पना है कि चैती लोग संगीत में विशेष स्थान रखती है।

अनुसंधान रेखा चित्र

प्रस्तुत लेख के लेखन में सिद्धांत विधि का उपयोग किया गया है जिसका स्त्रोत अनेक विश्वसनीय स्तर की पुस्तकें, पत्रिकाएं तथा ऑनलाइन वेबसाइट्स है।

निष्कर्ष

चैती लोकगीत के रूप में प्रचलित तो है पर अब कलाकारों के द्वारा उसे शास्त्रीय पुट देने का जो कार्य किया गया है उससे उसका प्रचार व प्रसार और लोकप्रियता का दायरा और भी बढ़ गया है। विभिन्न कार्यक्रमों, वर्कशॉप इत्यादि के अतिरिक्त इसे पाठ्यक्रम के रूप में भी शामिल किया जा रहा है जो इसके विकास को निरंतर अग्रसर रखेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सरोजनी, रोहतगी,अवधी का लोक साहित्य, नेशल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1971

डॉ सुमन, ऋतुकालीन लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व (उत्तर प्रदेश के संदर्भ में), नैतिक प्रकाशन गाजियाबाद 2012

शान्ति, डॉ जैन, चैती, वि0वि0 प्रकाशन वाराणसी प्रथम संस्करण 1980, द्वितीय सस्करण 2007

श्रीवास्तव वीणा, भारतीय लोक संगीत संरक्षण, संवर्धन एवं संभावनाए, राधा, पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2012

उपाध्याय, डॉ0 कृष्ण देव , हिन्दी प्रदेश के लोक गीत, साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद 1990

अंत टिप्पणी

1. *चैती–डॉ0 शान्ति जैन–पृ–29*
2. *ऋतुकालीन लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व–डॉ0 सुमन–पृ0 80*
3. *हिन्दी प्रदेश के लोकगीत–डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय–पृ0–26 एण्ड 44*
4. *चैती–डॉ0 शान्ति जैन–पृ0 81*
5. *भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत–डॉ0 संजय कुमार सिंह–पृ0 186*
6. *भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत–डॉ0 संजय कुमार सिंह–पृ0 186*
7. *चैती–डा0 शान्ति जैन–पृ0 37*
8. *भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत–डॉ0 संजय कुमार सिंह–पृ0 186*
9. *ऋतुकालीन लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व–डॉ0 सुमन–पृ0 80*

10. *भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत–डॉ0 संजय कुमार सिंह–पृ0 144*
11. *चैती–डा0 शान्ति जैन–पृ0 53*
12. *वही, पृ0 53*
13. *भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत–डॉ0 संजय कुमार सिंह–पृ0 191*
14. *संगीत–सितम्बर 2010 पृ0 22–एकता पंडित*
15. *चैती–डा0 शान्ति जैन–पृ0 54*
16. *हिन्दी प्रदेश के लोकगीत–डा0 कृष्णदेव उपाध्याय–पृ0 80*
17. *चैती–डा0 शान्ति जैन–पृ0 47, 81–82, 88, 91*
18. *चैती–डा0 शान्ति जैन–पृ0 49–50*
19. *संगीत – सितम्बर 2010 पृ0 22*
20. *चैती–डा0 शान्ति जैन–पृ0 49*